

दान-पुण्य की यह परम्परा, हुई जगत में शुभ प्रारम्भ ।
 हो निष्काम भावना सुन्दर, मन में लेश न हो कुछ दम्भ ॥
 चार भेद हैं दान धर्म के, औषधि-शास्त्र-अभय-आहार ।
 हम सुपात्र को योग्य दान दे, बनें जगत में परम उदार ॥
 धन वैभव तो नाशवान हैं, अतः करें जी भर कर दान ।
 इस जीवन में दान कार्य कर, करें स्वयं अपना कल्याण ॥
 अक्षय तृतीया के महत्त्व को, यदि निज में प्रकटायेंगे ।
 निश्चित ऐसा दिन आयेगा, हम अक्षय-फल पायेंगे ॥
 हे प्रभु आदिनाथ! मंगलमय, हम को भी ऐसा वर दो ।
 सम्यग्ज्ञान महान सूर्य का, अन्तर में प्रकाश कर दो ॥
 ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(दोहा)

अक्षय तृतीया पर्व की, महिमा अपरम्पार ।
 त्याग धर्म जो साधते, हो जाते भव पार ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

दर्शन-स्तुति

निरखत जिनचन्द्र-वदन स्व-पद सुरुचि आई ।
 प्रकटी निज आन की पिछान ज्ञान भान की ।
 कला उद्योत होत काम-जामनी पलाई ॥ निरखत. ॥
 शाश्वत आनन्द स्वाद पायो विनस्यो विषाद ।
 आन में अनिष्ट-इष्ट कल्पना नसाई ॥ निरखत. ॥
 साधी निज साध की समाधि मोह-व्याधि की ।
 उपाधि को विराधि कै आराधना सुहाई ॥ निरखत. ॥
 धन दिन छिन आज सुगुनि चिन्ते जिनराज अबै ।
 सुधरो सब काज 'दौल' अचल रिद्धि पाई ॥ निरखत. ॥

— पं. दौलतराम